Volume: 2 Issue: 7 Pages: 43-45

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय जाने वाले बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

[*1] मन्जू सिंह शोधार्थी

[*1] समाज कार्य विभाग, महात्मा गॉधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी बिहार, भारत

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 05/June/2023
Accepted: 31/July/2023

***Corresponding Author**
मन्जू सिंह
समाज कार्य विभाग, महात्मा गॉधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी बिहार, भारत

सारांश

बालक का सर्वांगीण विकास शिक्षा के द्वारा किया जाता है। व्यक्ति का निरन्तर सर्वोत्तमुखी विकास होता है। जहाँ शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व हैं। कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें। जिससे कि वह भी अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर अपनी भूमिका निभा सकें। छात्रों के सर्वांगीण विकास में शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण योगदान देती है। बच्चों के बीच स्वास्थ्य व्यवहार को बढ़ावा देना और स्कूलों में बच्चों को स्वास्थ्य एवं पोषण के बारे में उचित जानकारी प्रदान कराना है । हमारे देश की अधिकांश आबादी गाँव मे निवास करती है और गाँव में शिक्षा के प्रति कई बार उदासीनता और अज्ञानता का वातावरण देखने को मिलता है। यही कारण है कि हमारें लिए ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की शिक्षा पर बात करना अति प्रसांगिक हो जाता है। व्यवहार संबंधी समस्याएं शिक्षकों और अभिभावकों के लिए स्कूली बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याए महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। इन्हें तत्काल और दीर्घकालिन दोनों प्रतिकुल परिणाम के लिए भी जाना जाता है । हमारे देश में स्कूली बच्चों में मनोरोंग रूगणता पर आज भी अध्ययन की कमी हैं। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र अध्ययन विधि का प्रयोंग किया गया हैं। जिसमें उत्तर प्रदेश जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय जाने वाले बच्चों के स्वास्थ्य एवं शैक्षिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया हैं।

मूल शब्द: शिक्षा, सर्वांगीण विकास, विद्यालय बच्चों का व्यवहारिक स्वस्थ्य एवं व्यवहार संबंधी समस्याए।

परिचय

बच्चों का स्वास्थ्य सर्व समाजों के लिए महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि यह उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होते है। इन तीनों तत्वों को व्यापक ढंग से पेश करने की सख्त आवश्यकता है। शिक्षा और स्वास्थ्य के सम्बन्धों को ऐसी दृष्टि से अधिक देखा जा सकता है क्योंकि शिक्षा की वजह से ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा होती है और बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति में भी सुधार आता है। स्वास्थ्य और शिक्षा के परस्पर सम्बन्धों को पर्याप्त रूप से इस बहस में पेश नहीं किया जा सकता हैं। विशेषकर स्कूली बच्चों के मामले में। स्वास्थ्य एक बहुआयामीय जैविक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलूओं से मिल कर बने होने के कारण संकल्पना है। स्वास्थ्य सिर्फ एक बिमारियों का न होना ही नहीं हैं बल्कि यह भोजन, सुरक्षा, शुद्ध जलापूर्ति, आवास, साफ-सफाई और स्वास्थ्य सेवाओं जैसी बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुँच से भी प्रभावित होता है।

शिक्षा भाषा बहता नीर जैसी है जो निरन्तर गतिमान रहती है। यह समाज और व्यक्ति के बीच में जितना बढ़ती है। उतना ही बढ़ती जाती है शिक्षा ना सिर्फ व्यक्ति के अन्दर प्रत्येक विषय के बारे में जानने और चीजो को सीखने-समझने की क्षमता विकसित करती है। साथ ही व्यक्ति को सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से भी जितना विकसित करने में उसकी सहायक होती है। उतना ही शिक्षा व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से ही बच्चें अपने जीवन में अनेक सफलताओं को हासिल कर सकते है। इसलिए सर्व समाज के व्यक्तियों को शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए। क्योकिं शिक्षत और सभ्य समाज के द्वारा ही देश के आने वाले कल के भविष्य को बच्चों के माध्यम् से ही बेहतर बनाया जा सकता है और शिक्षा आज हमारे बच्चों के कल का भविष्य है। जग-जाहिर है कि हम अपने बच्चों के भविष्य के विषय में सोचे और उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान कराने लिए अथक प्रयास करें।

सर्वप्रथम बच्चें अपनी प्रथमिक शिक्षा अपने घर परिवार से और समाज से ही ग्रहण करते है। शैक्षिक संस्थानों में तो वह बाद में प्रवेश करते है। हमारे अपने वृद्ध लोग ही छोटे बच्चों को उनकी छोटी उम्र में ही अपने जीवन के अनुभव और शिक्षा को सिखाते पढ़ाते व समझाते रहते है। इस प्रकार से शिक्षा एक पीढ़ी से ही दूसरी पीढ़ी तक गतिमान होती रहती है।

हमारे देश की अधिकांश आबादी गाँव मं निवास करती हैं और गाँव में शिक्षा के प्रति कई बार उदासीनता और अज्ञानता का वातावरण देखनें को मिलता है। यहीं कारण है कि हमारें लिए ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की शिक्षा पर बात करना अति प्रसांगिक व महत्वपूर्ण हो जाता हैं।

ग्रामीण बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताएँ

सूक्ष्म अध्ययन करने पर यह पता चहता हैं कि उपलब्ध आँकड़े और जानकारियों का ग्रामीण बच्चों की मृत्यु और अस्वास्थ्यता के लिए मुख्य रूप से कुछ बिमारियों जैंसे डायरिया, न्यूमोनिया ओर कई प्रकार के बुखार जिम्मेंदार होते हैं। यह सब बिमारियां बदतर हालात और मूल आवश्यकताओं का समय पर पूर्ति का न होना हैं। शिंशु मृत्युदर, माँ और बच्चें की मृत्यु और बच्चों के खराब स्वास्थ्य के मामलें में अत्याधिक तादात में अनुसूचित-जाति और अनुसूचित-जनजाति समूहों में देखने को मिलतें हैं (आई0 आई0 पी0 एस0 2000) यह सभीं ऊपर दिये गये रोगों का मुख्य कारण ग्रामीण बच्चों में कुपोषण हैं। N.F.H.S के आकड़े यह बताते है कि ग्रामींण क्षेत्रों में रहने वाले 53 प्रतिशत बच्चों का वजन सामान्य से भी कम है और ऐसा कई राज्यों में देखा गया है कुछ राज्यों में तो यह संख्या 60 प्रतिशत हंै। विशंषकर गरीब राज्यों के निम्न जातियों के समूह में। ग्रामीण बच्चों की इस प्रकार से बाधित वृद्धिं चिन्ता का विषय है और इसका प्रभाव ग्रामींण क्षंत्र के बच्चों के स्कूली जीवन पर भी पड़ता हैं।

वर्तमान समय में जहाँ एक ओर भारत को विश्व गुरू बनाने की बात चल रही है। वही पर दूसरी ओर भारत में पर्याप्त स्कूल और गुणवतापूर्ण स्कूली शिक्षा का आभाव है। आज भी हमारे देश में आज भी कुछ ऐसे स्थान है जहाँ आज भी स्कूल नहीं है। प्राथमिक शिक्षा को ग्रहण करने के लिए छोटे-छोटे बच्चे एक गाँव से दूसरे गाँव में धूप, बरसात, ठण्डी में भी पैदल स्कूल जाते है और जहाँ पर वह पढ़ने जाते है। वहाँ का शैक्षिक स्तर हम उन बच्चों के बोलने या पढ़ने से ही अनुमान लगा सकते हैं। कि वहाँ का शैक्षिक स्तर क्या है? अधिकांश बच्चें पहली-दूसरी कक्षाओं की पुस्तके पढ़ने में ही असर्मथ होते है। इसी तरह उत्तर प्रदेश राज्य के कुछ जिलों में आज भी कुछ ऐसे उदाहरण मिल जाऐगे। जहाँ की शिक्षा की गुणवत्ता आज भी ठीक नही है। जागरूकता और स्कूलों के अभाव के चलते न जाने कितने मासूम बच्चे अपने जीवन में शिक्षा से वंचित रह जाते है। जो कि जीविका उपार्जन के लिए मजदूरी एवं कृषि कार्य में लग कर अपने माता-पिता का हाथ बटाते है। या फिर वह बडे-बडे नगरों, महानगरों में पलायन कर जाते है। जैसे- दिल्ली, मुम्बई इत्यादि।

लड़कियों के लिए यह परिस्थिति एक अभिशाप बनकर उनके सामने आती है। ज्यातर माता-पिता अपनी गरीबी के कारण बेटा या बेटी में से बेटे को ही शिक्षा हासिल कराने के लिए बाहर जाने की अनुमति प्रदान करते हैं। जिसके कारण लड़किया अपने जीवन में शिक्षा से वंचीत रह जाती है।

ग्रामीण लोगों के जीवन में स्कूली शिक्षा की स्थिति शोचनीय है। यह बात (Annual Status of Education Report & ASER) 2018 की रिपोर्ट में यह ज्ञात होता है कि देश में प्राथमिक शिक्षा की दिशा और दशा क्या है? 2018 में ग्रामीण भारत में 3 से 16 वर्ष के बच्चा का स्कूल में नामांकन और 5 से 16 वर्ष के बच्चों के पढ़ने और गणित के सवालों को हल करने की क्षमताओं को परखा गया हैं। इसमें देश के 596 जिलों के कुल 3 लाख 54 हजार 944 घरों को शामिल किया गया हैं। जिसके जरिये 3 से 15 वर्ष के 5 लाख 46 हजार 527 बच्चों का सर्वे किया गया। ये आकड़े स्कूली शिक्षा के व्यक्ति और समाज के साथ अंतः क्रिया के बारे में महत्वपूर्ण रूझान देते है।

केन्द्र सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक स्तर को ऊचा उडनें के लिए 1 अप्रैल 2018 से 31 मार्च 2020 में नई एकीकृत शिक्षा योजना भी बनाई गयी थी। इस योजना के द्वारा सर्वे शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा, अभियान और शिक्षाक शिक्षण अभियान समाहित थे। इस योजना को लागू करने के लिए सरकार ने 75 हजार करोड़ रूपये की मंजूरी दी थी। जिसके द्वारा इस योजना का उद्देश्य सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा पूरे देश में प्री-नर्सरी से लेकर 12वीं पास तक के सभी बच्चों को इसकी सुविधा मिल सके। सरकार द्वारा स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।

सरकार वर्तमान समय में शिक्षा पर बल दे रही है। सरकार द्वारा लड़कियों को शिक्षित करने के लिए अनेक प्रकार की योजनाए चलाई जा रही हैं केन्द्र और राज्य सरकार में भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए कई योजनाओं की शुरूआत की गई हैं। सरकार द्वारा सर्वशिक्षा अभियान, मिड-डे मिल जैसी योजनाए गरीब परिवारों के बच्चों के लिए चलाई जा रही है। जहाँ पर उन्हें शिक्षा के साथ खाने की भी व्यवस्था की गई है। जिससे की बच्चों पर्याप्त मात्रा में पोषण उपलब्ध कराया जा सके। जो कि बच्चों के स्वास्थ्य और शारीरिक, मांनसिक रूप से उनके विकास में सहायता प्रदान करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जिसके द्वारा बालको के व्यक्तित्व का निरन्तर सर्वोच्चमुखी विकास होता है। बच्चों के स्वस्थ रहने के लिए शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है। क्योंकि शिक्षा के द्वारा विद्यालयों में बच्चों को प्रतिदिन स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के तरीके बताए जाते हैं। परन्तु बच्चों के जीवन पर विद्यालय के वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि विद्यालय का वातावरण अनुकूल होगा तभी तो बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक स्तर में भी सुधार होना सम्भव है। विद्यार्थियों के बीच स्वास्थ्य व्यवहार को बढ़ावा देना और स्कूलों में बच्चों को स्वास्थ्य एवं पोषण के बारे में उचित जानकारी कराना है। जहाँ हमारे देश की अधिकांश आबादी गाँव मे निवास करती है और गाँव में शिक्षा के प्रति कई बार उदासीनता और अज्ञानता का वातावरण देखने को मिलता है। यही कारण है कि हमारे लिए ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की शिक्षा पर बात करना अति प्रसांगिक हो जाता है।

उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय जाने वाले बच्चों के शैक्षिक स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय जाने वाले बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।

उपकल्पना

1. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शैक्षिक स्तर आज भी निम्न पाया गया है।
2. बच्चों के स्वास्थ्य पर निम्न प्रकार के प्रभाव पाये गये है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र अध्ययन विधि का प्रयोंग किया गया हैं। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय जाने वाले बच्चों के स्वास्थ्य एवं शैक्षिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया हैं। न्याय दर्शन के रूप में उत्तर प्रदेश जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों को लिया गया हैं। जिसमें दो ग्राम पंचायतों के 25-25 कुल 50 ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि के द्वारा किया गया है। इनमें स्वास्थ्य एवं शैक्षिक समावेशन की स्थिति समझने हेतु स्वानिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इससे प्राप्त समंकों का विश्लेषण प्रतिशतमान की गणना के आधार पर किया गया है।

निष्कर्ष विवेचन

प्रतिक्रिया

क्रमांक	कथन	हाँ प्रतिशत	नहीं प्रतिशत
1	क्या आपके विद्यालय में पढ़ाई ठीक प्रकार से होती है।	70	30
2	क्या आपके विद्यालय मे शिक्षों द्वारा साफ-सफाई के बारे में जानकारी दी जाती हैं।	80	20
3	क्या आपके विद्यालय एवं कक्षाओं की प्रतिदिन साफ-सफाई होती है।	55	45
4	क्या आपके विद्यालय में मिड डे मील योजना द्वारा प्रतिदिन भोजन प्राप्त होता है।	86	14
5	यदि हाँ तो भोजन स्वच्छ प्रदान किया जाता है।	89	11
6	क्या आपके विद्यालय के शौचालय में प्रतिदिन साफ-सफाई रहती है।	45	55
7	क्या आपके विद्यालय में पीने हेतु स्वच्छ जल उपलब्ध है।	65	35

उक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में जाने वाले बच्चों द्वारा 70 प्रतिशत यह कहना है कि विद्यालयों में शिक्षा का स्तर उचित है तथा 30 प्रतिशत बच्चों ने शिक्षा का स्तर ठीक नहीं बताया है। अतः 80 प्रतिशत बच्चों का यह कहना है कि विद्यालय के शिक्षकों द्वारा उचित साफ-सफाई व स्वच्छता के बारे जानकारी प्रदान की जाती है व 20 प्रतिशत बच्चों ने इसे अस्विकार किया है। 55 प्रतिशत बच्चों द्वारा विद्यालय में कक्षाओं की साफ-सफाई किये जाने को हाँ एवं 45 प्रतिशत बच्चों द्वारा नहीं किये जाने की जानकारी प्रदान की। 86 प्रतिशत बच्चों ने मिड डे मील योजना के द्वारा प्राप्त भोजन व उसकी स्वच्छता के बारे में हाँ में उत्तर दिया व 14 प्रतिशत ने नही में उत्तर दिया। साथ ही साथ बच्चों द्वारा विद्यालय में प्रतिदिन शौचालय की साफ-सफाई के बारे में 45 प्रतिशत हाँ और 55 प्रतिशत बच्चों द्वारा नहीं होनी की बात की। अतः स्वच्छ पीने हेतु जल की उपलब्धता होने में 65 प्रतिशत ने हाँ में उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया एवं 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा नहीं में उत्तर दिया।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है। कि आज भी हमारे देश के कई राज्यों में ऐसी भी ग्रामीण विद्यालय है जहाँ शौचालय विद्यालयों में बनाये तो गये है परन्तु वहाँ पानी के अभाव में उनमें साफ-सफाई रख पाना मुश्किल हो जाता हैं। जिससे के गा्रमीण विद्यालयों के बच्चों में स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेकों बिमारियाँ फैलती हैं। जिसके कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों व आस-पास के कई स्थानों पर शुद्ध पेय जल की व्यवस्था भी ठीक नहीं है जिसकी वजह से बच्चों को अशुद्ध पेय जल पिना पड़ता है जिसके कारण बच्चों में पेट सम्बन्धी अनेकों बिमारियाँ फैलती है। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा को बेहतर करने के लिए शैक्षिक जागरूकता का बढ़ावा देने पर बल देना होगा और बच्चों के अभिभावकों की शैक्षिक विरोधाभास को समाप्त करना होगा तथा इसके साथ ही साथ साम की संकुचित मानसिकता और बेटा-बेटी के भेदभाव को भी कम करना होगा। शिक्षा के प्रति व्यक्ति, समाज और सरकार सभी को मिल कर सचेत होना पडेगा। सरकार को पिछडें इलाकों में विद्यालयों एवं अध्यापकों की व्यवस्था और अधिक करनी होगी। जिससे देश के हर बच्चों को शिक्षा प्राप्त हो सके। क्योंकि शिक्षा पर प्रत्येक नागरिक का समान अधिकार है इसलिए सभी को शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए। क्योंकि एक सभ्य और शिक्षित समाज के द्वारा ही देश के आने वाले कल को बेहतर बनाया जा सकता है।

संदर्भ

1. धनशेखरन 1990, ए स्टडी आफ प्राइमरी एंड मिडिल स्कूल टीचर्स रिगार्डिंग हेल्थ प्रामोशन एमंग स्कूल चिल्ड्रेन, एम0 फिल0 एजुकेशन, मुदरई कामराज विश्वविद्यालय।
2. सिंह निशांत 2005, मानवाधिकार और महिलाएँ नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन।
3. उप्पल श्वेता 2009, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ISBN 978-81-7450-933-8.
4. चटर्जी शान्तनु, मिश्रा टी0 एन0, ज्योति वेद 2018, योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता भावात्मक शिक्षा भाग-2, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़, रायपुर।
5. पुष्पाजलि 2018, भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति, Indian J.Soc & Pol.05 (1) 2018: 115:116 Special Issue, UGC List No- 47956
6. डेली अपडेट्स 2019, ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा की दशा और दिशा, 27 फरवरी, शासन व्यवस्था।
7. देवी ममता 2022, ग्रामीण परिवेश में बच्चों की स्कूली शिक्षा, संवेदना-2022; IV(I):ISSN 2581-9917A